This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6140**

Unique Paper Code : **205201** **E**

Name of the Paper : **Paper IV : हिंदी कहानी**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) HINDI (हिंदी)**

Semester : **II**

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8=16

(क) बिरजू को गोद में लेकर बैठी उसकी माँ की इच्छा हुई कि वह भी साथ-साथ गीत गाए । बिरजू की माँ ने जंगी की पतोहू की ओर देखा, धीर-धीरे गुनगुना रही है वह भी । कितनी प्यारी पतोहू है ! गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गन्ध निकलती है । ठीक ही तो कहा है उसने ! बिरजू की माँ बेगम है, लालपान की बेगम; यह तो कोई बुरी बात नहीं । हाँ, वह सचमुच लालपान की बेगम है ! बिरजू की माँ ने अपनी नाक पर दोनों आँखों को केन्द्रित करने की चेष्टा करके अपने रूप की झाँकी ली, लाल साड़ी की झिलमिल किनारी, मँगटीक्का पर चाँद । बिरजू की माँ के मन में अब कोई लालसा नहीं । उसे नींद आ रही है ।

(ख) पारसी चाल की एक गुलाबी साड़ी के नीचे चिकने काले बालों से घिरा हुआ उसका मुखमंडल दमकता था और उसकी आँखें मेरी ओर कुछ दया,

P.T.O.

कुछ हँसी और कुछ विस्मय से देख रही थीं । बस, पाठक ! ऐसी आँखें मैंने कभी नहीं देखी थीं । मानो वे मेरे कलेजे को घोल कर पी गईं । एक अद्भुत कोमल शांत ज्योति उनमें से निकल रही थी । कभी एक तीर में मारा जाना सुना है ? कभी एक निगाह में हृदय बेचना पड़ा है ? कभी तारामैत्राक और चक्षुमैत्री नाम आए हैं ? मैंने एक सेकेंड में सोचा और निश्चय कर लिया कि ऐसी सुन्दर आँखें त्रिलोकी में न होंगी और यदि किसी स्त्री की आँखों को प्रेमबुद्धि से कभी देखूँगा तो इन्हीं को ।

(ग) गनी ने देखा कि पहलवान के होंठ सूख रहे हैं और उसकी आँखों के गिर्द दायरे गहरे हो गए हैं । वह उसके कन्धे पर हाथ रख कर बोला, "जो होना था हो गया रक्खिआ ! उसे अब कोई लौटा थोड़े ही सकता है ! ख़ुदा नेक की नेकी को बनाए रखे और बद की बदी माफ़ करे ! मैंने आ कर तुम लोगों को देख लिया, सो समझूँगा कि चिराग को देख लिया । अल्लाह तुम्हें सेहतमंद रखे !" और वह छड़ी के सहारे उठ खड़ा हुआ । चलते हुए उसने कहा 'अच्छा रक्खे, पहलवान !'

2. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** पाठांशों का रचना-कौशल लगभग **150** शब्दों में स्पष्ट कीजिए : 7+7

(क) **निर्देश : भाषा एवं संवाद योजना की दृष्टि से :**

एक, जो उसके पास ही थी, कहने लगी "अरे इनकर मनई तो नाही आइलेन । हो देखहो रोवल करथईन ।"

दूसरी : "अरे दुसर गाड़ी में बैठा होईँहें ।"

पहली : "दुर बौरंही ! ई जनानी गाड़ी थोड़े है ।"

दूसरी : ''तऊ तो भलू तो कहू ।'' कहकर दूसरी भद्र महिला से पूछने लगी ''कौन गाँव उतरबु बेटा ! मोरजैपूरा चढ़ो हऊ न ।'' इसके जवाब में उसने जो कहा सो वह सुन न सकी ।

तब पहली बोली : ''हट हम पुंछ्लान; हम कहाँ ऊतरबू हो ? आंय ईलाहाबास ?''

दूसरी : ''ईलाहाबास कौन गाँव हो गोइँयाँ ?''

पहली : ''अरे नाही जनलूँ ? पैयाग जी, जहाँ मनई मकर नहाए जाला ।''

(ख) **निर्देश : प्रतीकात्मकता की दृष्टि से :**

एकाएक बहुत सारे काले-काले, गोल-गोल दाने उसे अम्माँजी के आस-पास तितर-बितर होते लगे । उसने घबराकर देखा अम्माँजी के हाथ की तसबीह का डोरा टूट गया था और डोरे से निकलकर दाने चारों तरफ़ बिखर रहे थे । खुद अम्माँजी इससे बेखबर, आँसुओं में भीगी आँखों से हवा में तकती उँगलियाँ तसबीह पर फेरे जा रही थीं । वह बड़ा दाना काबेवाला तसबीह का इमाम, उसने देखा धीरे-धीरे लुढ़कता, उसके पैरों के पास आकर ठहर गया है ।

(ग) **निर्देश : चरित्रांकन की दृष्टि से :**

मुझे ब्रजनंदन पर आश्चर्य आकर भी आश्चर्य नहीं होता । उसने दृढ़ता के साथ कह दिया कि मैं यह शादी नहीं करूँगा । लेकिन उसने मुझसे अकेले में यह भी कहा कि चाचा जी, मैं और विवाह करूँगा ही नहीं, करूँगा तो उसी से करूँगा । उस पत्र को वह अपने से अलहदा नहीं करता है । और मैं देखता हूँ कि उस ब्रजनंदन का ठाट-बाट आप ही कम होता जा रहा है । सादा रहने लगा है और अपने प्रति सगर्व बिल्कुल भी नहीं दीखता है और आवश्यकता से अधिक बात नहीं करता ।

3. ''पिकनिक'' कहानी के कथ्य पर विचार कीजिए । 15

अथवा

'एक कमज़ोर लड़की की कहानी' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए ।

4. नई कहानी की दृष्टि से 'दोपहर का भोजन' के शिल्प का मूल्यांकन कीजिए । 15

अथवा

'माँ' कहानी में निहित माँ की व्यथा पर प्रकाश डालिए ।

5. 'दिल्ली में एक मौत' महानगरीय यांत्रिकता का सशक्त चित्र है—विचार कीजिए । 15

अथवा

'इन्द्रजाल' कहानी का शिल्प की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए ।